खुदरा क्षेत्र में ऋण संवृद्धि की गतिशीलता: जोखिम और स्थिरता संबंधी चिंताएं

विजय सिंह शेखावत, अवधेश कुमार शुक्ला, एसीवी सुब्रह्मण्यम और जुगनू अंसारी^ द्वारा

यह लेख अंतर-अस्थायी आधार पर पर्यवेक्षित संस्थाओं में खुदरा ऋण प्रवाह और आस्ति गुणवत्ता की गतिशीलता का विश्लेषण करता है। अध्ययन में पाया गया है कि विकास में बढ़ोतरी के बावजूद खुदरा ऋण पोर्टफोलियो की गुणवत्ता बैंकों, उत्पाद श्रेणियों और उधारकर्ता जोखिम वर्गों में अच्छी बनी हुई है। हालांकि, इसमें यह भी पाया गया है कि असुरक्षित खुदरा क्षेत्र में कुछ उप-श्रेणियों में कमजोरी के संकेत दिखाई देते हैं, जिनकी उधारदाताओं द्वारा बारीकी से निगरानी करने की आवश्यकता है। रिज़र्व बैंक द्वारा हाल ही में किए गए पूर्व-निवारक व्यापक विवेकपूर्ण उपाय वित्तीय स्थिरता के लिए शुभ संकेत हैं।

1. परिचय

पिछले दशक में बैंक ऋण की क्षेत्रीय संरचना में निर्णायक बदलाव आया है। संरचनात्मक परिवर्तन मुख्य रूप से समग्र बैंक ऋण में व्यक्तिगत ऋण या खुदरा ऋण की बढ़ती प्रमुखता से प्रेरित है।[1] जून 2023 तक, व्यक्तिगत ऋण बैंक ऋण की सबसे बड़ी श्रेणी थी, जो कुल उधारकर्ता खातों का 49 प्रतिशत और बकाया गैर-खाद्य ऋण का 30 प्रतिशत है।[2] हाल के दिनों में, कुल गैर-खाद्य ऋण में व्यक्तिगत ऋणों की हिस्सेदारी में लगातार वृद्धि हुई है। 2015 से 2023 के बीच, व्यक्तिगत ऋणों ने बकाया राशि में 17 प्रतिशत और उधारकर्ता खातों में 15 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज की। इसके मुकाबले गैर-खाद्य ऋण ने बकाया राशि में 10 प्रतिशत और उधारकर्ता खातों में 12 प्रतिशत की सीएजीआर दर्ज की। खुदरा ऋण की हिस्सेदारी में उपरोक्त वृद्धि को देखते हुए, परिवारों की बढ़ती ऋणग्रस्तता और खुदरा क्षेत्रों में अपने जोखिम को बढ़ाने से उधार देने वाली संस्थाओं के लिए संभावित जोखिमों पर चिंता जताई गई है (रॉय, 2023; दास, 2024[3])। साहित्य ने आगे चिंता व्यक्त की है कि परिवारों की ऋणग्रस्तता में वृद्धि मध्यम से दीर्घावधि में सतत विकास की कीमत पर समकालीन खपत का विस्तार कर सकती है (गुप्ता, 2023)।

कई अध्ययनों ने भारतीय संदर्भ में खुदरा ऋण में वृद्धि का विश्लेषण किया है। यह देखा गया है कि व्यक्तिगत ऋणों ने समग्र ऋण में वृद्धि की गति को बनाए रखने में सहायता की है (कुमार और सेनापति, 2023)। साथ ही, खुदरा ऋण वृद्धि आस्ति गुणवत्ता और ब्याज दरों (पूर्वोक्त) दोनों के प्रति संवेदनशील है। हालांकि, यह भी देखा गया है कि केवल कुछ बैंक ही व्यक्तिगत ऋण खंड में क्रेडिट प्रवाह पर हावी हो रहे हैं, जो विभिन्न बैंकों द्वारा अपनाए गए व्यवसाय मॉडल में अंतर को दर्शाता है (सेनापति और प्रकाश, 2021)। नतीजतन, बैंकों के क्रेडिट पोर्टफोलियो में व्यक्तिगत ऋण की हिस्सेदारी बैंकों में असमान तरीके से बढ़ी है। इसके अलावा, वित्तीय स्थिरता और जोखिम प्रबंधन के दृष्टिकोण से, किसी भी क्षेत्र में ऋण प्रवाह में निरंतर वृद्धि बिना किसी संकेंद्रित जोखिम के ठोस मौलिक संवृद्धि चालकों द्वारा समर्थित होनी चाहिए (रॉय, 2006)।

हालांकि, व्यक्तिगत ऋणों, विशेष रूप से असुरक्षित ऋणों के लिए ऋण प्रवाह में निरंतर वृद्धि, और परिणामस्वरूप, समग्र ऋण में उनके हिस्से में वृद्धि भी इकाई और प्रणालीगत दोनों स्तरों पर वित्तीय जोखिम और स्थिरता संबंधी चिंताएं पैदा कर सकती है। इसलिए, यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि क्या व्यक्तिगत ऋण खंड में देखी गई वृद्धि ओवरहीटिंग (यानी, अत्यधिक क्रेडिट आपूर्ति) के बिना मौलिक कारकों द्वारा संचालित की जा रही है

---

^ लेखक भारतीय रिजर्व बैंक के पर्यवेक्षण विभाग से सम्बद्ध हैं। व्यक्त किए गए विचार लेखकों के हैं और रिज़र्व बैंक के विचारों को प्रतिबिंबित या प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। लेखक श्री स्वामीनाथन जे, डिप्टी गवर्नर और श्री रोहित जैन, कार्यकारी निदेशक को उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। श्री रोहित शिवाजी नरवाने के डेटा समर्थन को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाता है।

[1] इस अध्ययन में व्यक्तिगत या खुदरा ऋणों का परस्पर उपयोग किया है, और वे व्यक्तियों को दिए गए आवास ऋण, संपत्ति के खिलाफ ऋण, वाहनों की खरीद, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं, सोने के आभूषणों के खिलाफ ऋण, व्यक्तिगत ऋण, शैक्षिक ऋण, क्रेडिट कार्ड आदि का उल्लेख करते हैं।

[2] सारणी संख्या 3 & 4 से प्राप्त - व्यवसाय के अनुसार अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के बकाया ऋण का ऋण सीमा-वार वर्गीकरण, मूल सांख्यिकीय विवरणी (त्रैमासिक क्रेडिट डेटा) – जून 2023।

[3] https://www.businesstoday.in/magazine/money-today/story/the-retail-lending-burden-behind-the-surge-in-unsecured-loans-402267-2023-10-17

(लोम्बार्डी एट अल.,2017)। इसके अलावा, इकाई स्तर पर, बैंकों के क्रेडिट पोर्टफोलियो में व्यक्तिगत ऋणों की हिस्सेदारी में वृद्धि उधारकर्ता चयन के संबंध में मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रथाओं और संकेंद्रित जोखिमों के निर्माण से बचने के लिए आकार एवं जोखिम श्रेणियों में विविधीकरण के साथ होनी चाहिए (आरबीआई, 2022; पात्रा, 2023; आरबीआई, 2023)। इस संदर्भ में, वर्तमान अध्ययन विकास और आस्ति गुणवत्ता प्रवृत्तियों के प्रति खुदरा ऋण की गतिशीलता का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से क्या खुदरा ऋण और इसके उप-क्षेत्रों में वृद्धि का वर्तमान चरण टिकाऊ है और क्या इसमें कोई जोखिम का निर्माण निहित है, इसका विश्लेषण करके मौजूदा साहित्य में योगदान देता है।[4]

उपरोक्त का पता लगाने के लिए, यह अध्ययन कई दूरंदेशी, क्षेत्र विशिष्ट, समय शृंखला चर का विश्लेषण करता है। खुदरा ऋण प्रवाहों में वर्तमान संवृद्धि की निरंतरता की समस्या अर्थव्यवस्था के दो व्यापक क्षेत्रों जैसे परिवारों और वित्तीय सेवा प्रदाताओं अर्थात् बैंकों और गैर-बैंक वित्तीय निगमों की स्थिति पर निर्भर करती है। हालांकि, परिवार तकनीकी रूप से एक अवशिष्ट क्षेत्र हैं, और सामान्य सरकार तथा गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट क्षेत्र के विपरीत, इसमें क्षेत्र-विशिष्ट समग्र संकेतक नहीं हैं। इसलिए, परिवारों और वित्तीय सेवा क्षेत्र के सुस्थिति का आकलन वित्तीय भेद्यता संकेतकों जैसे, क्षेत्रीय और उत्पाद स्तरों पर सकल और वृद्धिशील अपराधों का उपयोग करके किया जाता है।

इन मुद्दों को हल करने के लिए, यह आलेख कई स्रोतों जैसे, आरबीआई के क्रेडिट रिलीज का क्षेत्रीय परिनियोजन, आरबीआई को प्रस्तुत पर्यवेक्षी विवरणी के माध्यम से प्राप्त एकत्रित जानकारी, और क्रेडिट सूचना कंपनी से प्राप्त एकत्रित जानकारी से प्राप्त डेटा का उपयोग करता है।[5] अध्ययन में क्षेत्रीय ऋण प्रवाह की सबसे अधिक संभावित ऐतिहासिक जानकारी का उपयोग किया गया है (मार्च 1999 से मार्च 2023)। हालांकि, अध्ययन का मुख्य प्रश्न विशेष रूप से तनाव की अवधि के दौरान वर्तमान क्रेडिट प्रवाह की स्थिरता पर केंद्रित है और इसलिए, इसने एक प्रमुख प्राकृतिक प्रयोग के रूप में कोविड-19 महामारी के साथ नवीनतम क्रेडिट जानकारी का विश्लेषण किया है। विशेष रूप से, यह अध्ययन बैंकिंग प्रणाली और परिवारों में तनाव के निर्माण का आकलन करने के लिए "के बाद से पहले" ढांचे का उपयोग करता है।

अध्ययन को पांच खंडों में विभाजित किया गया है। परिचय के बाद, दूसरा खंड खुदरा ऋण वृद्धि और इसकी संरचना (सुरक्षित बनाम असुरक्षित ऋण)[6] का कालानुक्रमिक अवलोकन प्रस्तुत करता है ताकि यह जांचा जा सके कि खुदरा ऋण खंड में निरंतर वृद्धि एक दीर्घकालिक घटना है या नहीं। तीसरा खंड बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों में खुदरा ऋण संरचना में प्रवृत्तियों का बहु-आयामी विश्लेषण प्रदान करता है। चौथा खंड खुदरा ऋण खंडों में जोखिम और स्थिरता संबंधी चिंताओं का व्यापक मूल्यांकन करता है। समापन टिप्पणियां पांचवें खंड में रेखांकित की गई है।

2. भारत में खुदरा ऋण का विकास – दीर्घकालिक प्रवृत्ति

खुदरा ऋणों की स्थिरता और उसमें तनाव के निर्माण के विश्लेषण के लिए एक संदर्भ निर्धारित करने से पहले, समग्र बैंक ऋण की तुलना में व्यक्तिगत ऋण की वृद्धि का एक प्रवृत्ति विश्लेषण किया जाता है। मार्च 1999 से मार्च 2023 तक बैंक क्रेडिट ऋणों की औसत वृद्धि 16.5 प्रतिशत थी, उसी समय व्यक्तिगत ऋणों में 21.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी 1)। नमूना अवधि के दौरान आवास ऋण सबसे तेजी (24.7 प्रतिशत) से बढ़ा। समग्र ऋण संवृद्धि की दीर्घकालिक प्रवृत्ति और ऋण संवृद्धि प्रक्षेपवक्र में बदलाव के आधार पर, पूरी अवधि को दो भागों अर्थात, 1999-2011 और 2011-2023 में विभाजित किया गया है। पहले चरण में, 21.5 पर औसत बैंक ऋण वृद्धि दूसरे चरण में 11.0 प्रतिशत की वृद्धि से लगभग दोगुनी थी। इसी समय, दोनों चरणों के दौरान खुदरा ऋण ने समग्र ऋण वृद्धि को पीछे छोड़ दिया, जो पहले और दूसरे चरण में क्रमशः 26.4 प्रतिशत और 16.1 प्रतिशत की दर से बढ़ी।

[4] इस अध्ययन में खुदरा या व्यक्तिगत ऋण व्यक्तिगत ऋणों को संदर्भित करता है जैसा कि रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित बैंक ऋण डेटा के क्षेत्रीय परिनियोजन में इंगित किया गया है (फुटनोट 1 देखें)। विनियामक खुदरा के संदर्भ में एक अंतर खींचा जा सकता है जिसका उपयोग बासेल दिशानिर्देशों के तहत पूंजी गणना के प्रयोजनों के लिए किया जाता है। जबकि कार्यात्मक रूप से इन वर्गीकरणों में कुछ ओवरलैप हो सकता है, विश्लेषणात्मक स्पष्टता के लिए भेद को बनाए रखा जाता है।

[5] ट्रांसयूनियन सिबिल।

[6] सुरक्षित खुदरा ऋण खुदरा आस्तियों को संदर्भित करते हैं जो संपार्श्विक या बंधक द्वारा समर्थित होते हैं।

सारणी 1: बैंक ऋण और वैयक्तिक ऋण में संवृद्धि के वर्णनात्मक आँकड़े

(प्रतिशत में)

चर	बैंक ऋण	व्यक्तिगत ऋण	उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	आवास ऋण	अन्य व्यक्तिगत ऋण
संपूर्ण अवधि: मार्च 1999 - मार्च 2023					
मीन	16.5	21.4	16.6	24.7	19.9
न्यूनतम	5.3	1.0	-30.4	7.6	-5.6
अधिकतम	31.4	57.2	63.2	73.9	45.2
मानक विचलन	7.1	11.8	25.8	16.4	10.7
भिन्नता का गुणांक	0.4	0.5	1.6	0.7	0.5
चरण 1: मार्च 1999 - मार्च 2011					
मीन	21.5	26.4	16.0	33.0	22.8
न्यूनतम	15.2	1.0	-25.7	7.6	-5.6
अधिकतम	31.4	57.2	51.1	73.9	45.2
मानक विचलन	5.5	14.5	25.1	19.0	12.9
भिन्नता का गुणांक	0.3	0.5	1.6	0.6	0.6
चरण 2: मार्च 2011 - मार्च 2023					
मीन	11.0	16.1	17.3	15.7	16.7
न्यूनतम	5.3	11.9	-30.4	9.5	3.8
अधिकतम	17.9	19.6	63.2	22.7	24.0
मानक विचलन	4.0	2.4	26.6	3.6	6.2
भिन्नता का गुणांक	0.4	0.1	1.5	0.2	0.4

स्रोत: भारतीय अर्थव्यवस्था पर हैंडबुक सांख्यिकी, डीबीआईई, सीईआईसी डेटा का उपयोग करते हुए लेखकों के अनुमान।

सारणी 2: वृद्धिशील ऋण संवृद्धि के संचालक

(प्रतिशत में)

अवधि	बैंक ऋण संवृद्धि में वैयक्तिक ऋणों का योगदान	वैयक्तिक ऋण संवृद्धि में आवास ऋणों का योगदान	वैयक्तिक ऋण संवृद्धि में गैर-आवासीय-वैयक्तिक ऋणों का योगदान
संपूर्ण: 1999 - 2023	28.6	49.5	50.5
चरण 1: 1999 - 2011	17.0	52.9	47.1
चरण 2: 2011 - 2023	32.9	48.8	51.2

स्रोत: डीबीआईई डेटा का उपयोग करके लेखकों के अनुमान।

संपूर्ण अवधि में, खुदरा ऋण की संवृद्धि में आवास ऋणों का प्रमुख हिस्सा था, तथापि, दूसरे चरण में, गैर-आवास खुदरा ऋण विकास के प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में उभरा है (सारणी 2)। दिलचस्प बात यह है कि यह देखा जा सकता है कि खुदरा ऋण वृद्धि में अस्थिरता (जैसा कि मानक विचलन और भिन्नता के गुणांक द्वारा मापी जाती है) में गिरावट आई है, जो इस क्षेत्र और इसके उप-क्षेत्रों में एक स्थिर ऋण प्रवाह का संकेत देती है, हालांकि समग्र बैंक ऋण संवृद्धि ने अस्थिरता में मामूली वृद्धि प्रदर्शित की है।

आम तौर पर, 2007 से 2011 के बीच एक अंतरिम को छोड़कर खुदरा ऋण में संवृद्धि समग्र बैंक ऋण से आगे निकल गई है (चार्ट 1 ए)।[7] इसके अलावा, यदि चरम मूल्यों पर विचार नहीं

चार्ट 1: संवृद्धि का ऐतिहासिक उतार-चढ़ाव और खुदरा ऋण की हिस्सेदारी

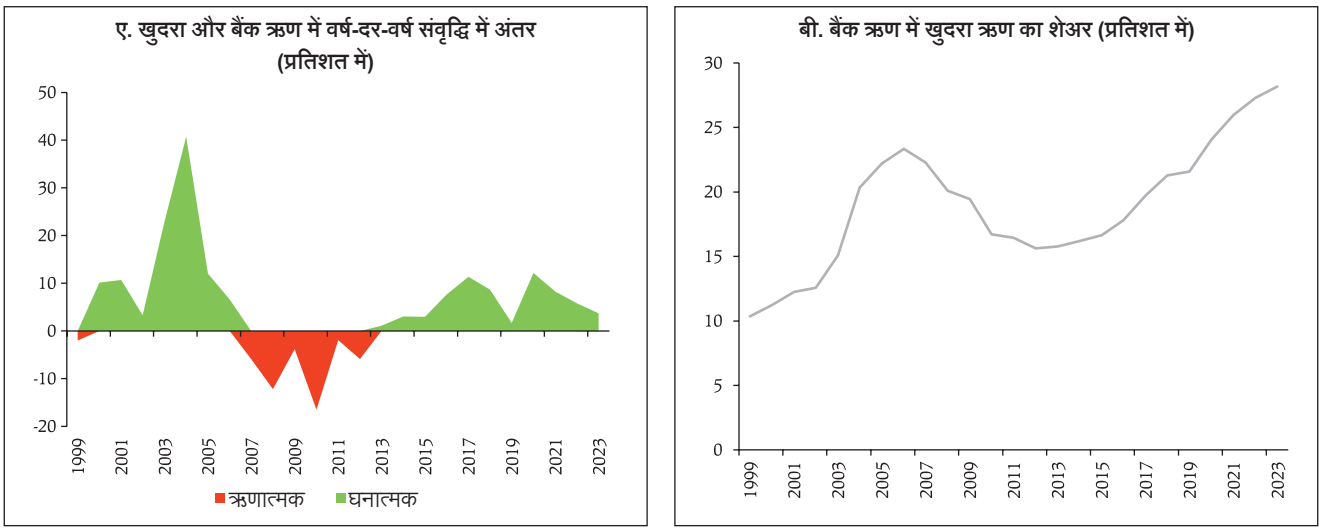

टिप्पणी: बैंक ऋण में संवृद्धि के ऊपर खुदरा ऋण खंड में संवृद्धि को दर्शाया गया है (अंतर = खुदरा ऋण संवृद्धि - बैंक ऋण संवृद्धि)।

स्रोत: भारतीय अर्थव्यवस्था की पुस्तिका, भारतीय रिज़र्व बैंक, सीईआईसी और स्टाफ की गणना।

[7] 2007 से 2013 के दौरान बैंक ऋण में वृद्धि मुख्य रूप से औद्योगिक ऋण और विशेष रूप से अवसंरचना ऋण द्वारा संचालित थी। संयोग से, एचपी फ़िल्टर का उपयोग करके प्रवृत्ति विश्लेषण भी 2007 और 2013 का संरचनात्मक अंतराल वर्षों के रूप में समर्थन करता है।

किया जाता है, तो खुदरा क्षेत्र की वृद्धि ज्यादातर बैंक ऋण की वृद्धि से अधिक थी। प्रथम दृष्टया, यह इंगित करता है कि खुदरा ऋण में वर्तमान वृद्धि (2014 के बाद) दीर्घकालिक रुझानों के अनुरूप नहीं होने की संभावना अधिक है (एंथोनी, शंकर, और साहू, 2019)। आय के स्तर में सामान्य वृद्धि, क्रय शक्ति, जनसांख्यिकीय प्रोफाइल, और क्रेडिट जानकारी (क्रेडिट स्कोर) की गुणवत्ता में सुधार ने खुदरा ऋण में विकास की गति को बनाए रखने में मदद की है (गोपीनाथ, 2005; बैग, 2012; सेनगुप्ता और वर्धन, 2021) (चार्ट 1बी)।

खुदरा ऋण का संयोजन भी समय के साथ बदलता रहा है। खुदरा ऋण के भीतर असुरक्षित ऋण का हिस्सा बढ़ रहा है। 2007 से 2023 के बीच, खुदरा ऋण में असुरक्षित अग्रिमों की हिस्सेदारी 25 से बढ़कर 35 प्रतिशत हो गई (चार्ट 2ए)।[8] इसके विपरीत, सुरक्षित ऋण का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख खंडों का हिस्सा स्थिर रहा। आवास ऋण खुदरा ऋण का लगभग 48 से 50 प्रतिशत हिस्सा रखने वाला सबसे बड़ा उप-क्षेत्र बना हुआ है, वाहन ऋण लगभग 10 से 12 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ दूसरा सबसे बड़ा खंड है। इसके अलावा, सुरक्षित और असुरक्षित दोनों घटकों ने समग्र बैंक ऋण संवृद्धि की तुलना में अधिक वृद्धि दर दर्ज की है (चार्ट 2 बी)।

ऐतिहासिक रूप से कम अपराध और गिरावट दर के कारण, खुदरा ऋण के उपरोक्त चालकों के अलावा, खुदरा क्षेत्र में बैंकों का निरंतर ध्यान रहा है और इसलिए अन्य क्रेडिट क्षेत्रों की तुलना में इस क्षेत्र में बेहतर क्रेडिट गुणवत्ता देखी गई है (चार्ट 3)[9]।

खुदरा ऋण संवृद्धि में उपर्युक्त प्रवृत्तियां, अपराध के निम्न स्तर, सुरक्षित और असुरक्षित ऋणों के संयोजन से यह संकेत मिलता है कि समग्र ऋण वृद्धि में खुदरा ऋण के प्रभुत्व का उद्भव इसके दीर्घावधिक प्रवृत्तियों के अनुरूप है। हालांकि, यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि क्या क्रेडिट प्रवाह का रुख बिना किसी भी जोखिम निर्माण के उपयुक्त उधारकर्ताओं की ओर है। जोखिम अभी भी विभिन्न प्रकार के उधारकर्ता जोखिम श्रेणियों के बीच ऋण की संकेंद्रितता और वितरण से

चार्ट 2: असुरक्षित ऋण के शेअर में उतार-चढ़ाव और खुदरा ऋण में संवृद्धि

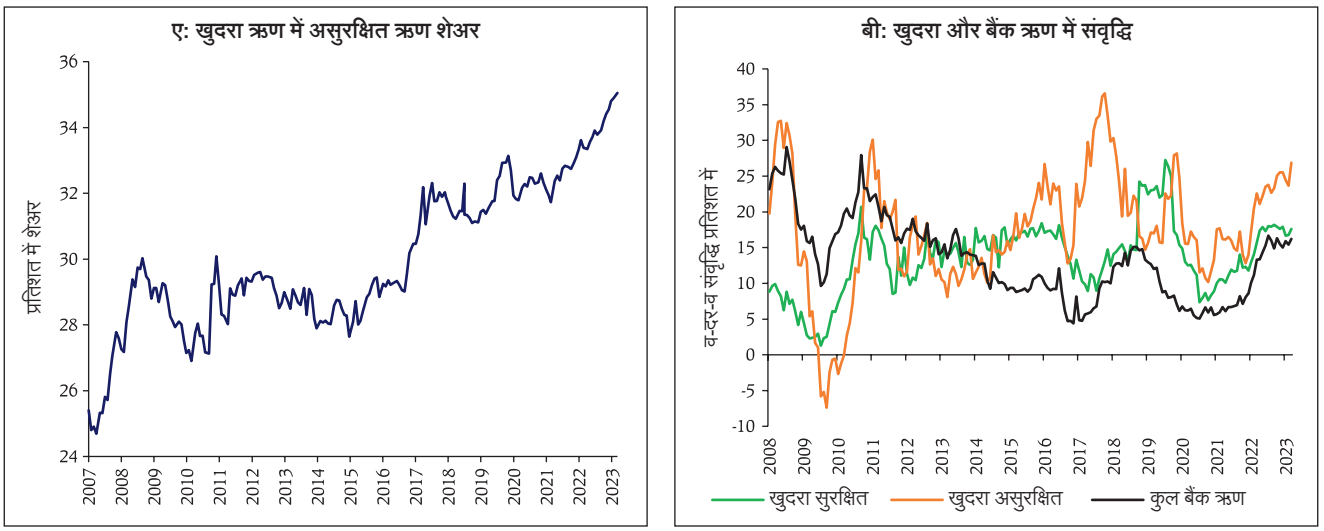

टिप्पणी: फुट नोट 7 देखें।
स्रोत: भारतीय अर्थव्यवस्था पर डेटाबेस, सीईआईसी, भारतीय रिजर्व बैंक और कर्मचारियों की गणना।

[8] व्यक्तिगत ऋण, क्रेडिट कार्ड बकाया, अन्य व्यक्तिगत ऋण, शैक्षिक ऋण जैसे खुदरा ऋण उप-खंड असुरक्षित अग्रिमों का प्रतिनिधित्व करने के लिए माने जाते हैं। यद्यपि, निश्चित आकार तक के शैक्षिक ऋण क्रेडिट गारंटी योजना के अंतर्गत आते हैं, तथापि सुरक्षित अग्रिमों के मामले में बंधक आस्तियों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, उन्हें असुरक्षित ऋण माना जाता है।

[9] पर्यवेक्षी डेटा की लगातार उपलब्धता को देखते हुए तुलना मार्च 2015 से की जाती है।

चार्ट 3: सकल अनर्जक अनुपात और स्लिपेज अनुपात में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का उतार-चढ़ाव

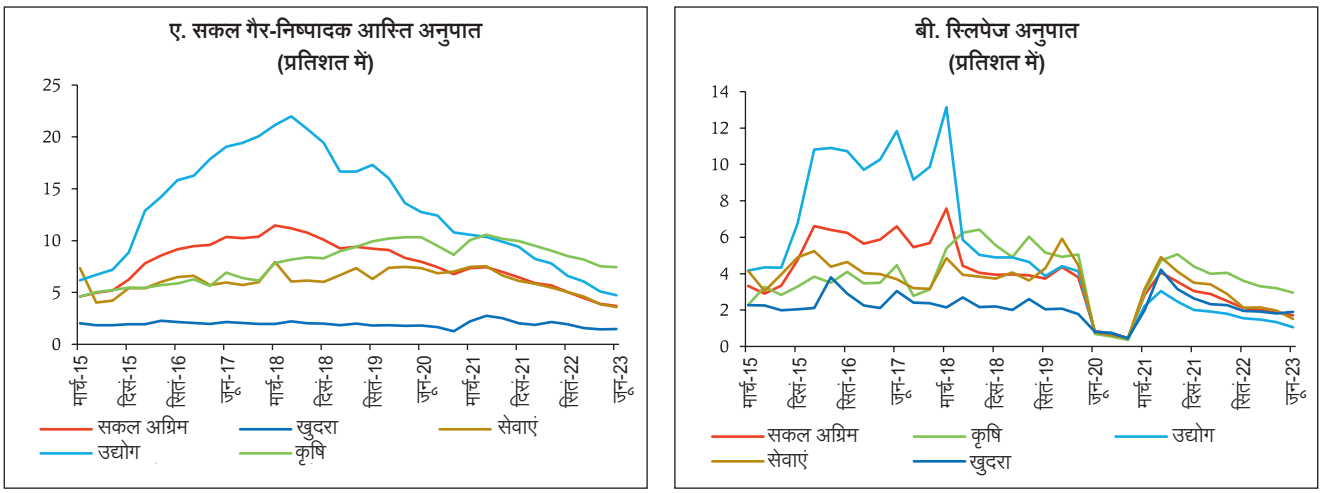

टिप्पणी : जीएनपी अनुपात और स्लिपेज अनुपात क्रमशः गैर-निष्पादित आस्तियों के स्टॉक और वृद्धि की दर दर्शाते हैं।
स्रोत: पर्यवेक्षी रिटर्न, भारतीय रिज़र्व बैंक।

उपजा हो सकता है।[10] इसलिए, अगले खंड में, जोखिमों के संकेंद्रण का पता लगाने के लिए खुदरा ऋण संवृद्धि की प्रकृति और संस्थाओं, उत्पादों और उधारकर्ता जोखिम श्रेणियों में इसके वितरण की जांच की जाती है।

3. क्रेडिट प्रवाह के आयाम

३.१ क्या सही उधारकर्ताओं को ऋण मिलता है?

खुदरा ऋण पोर्टफोलियो की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें उधारकर्ता और उत्पाद श्रेणियों में इसके विविधीकरण के कारण समग्र रूप से चूक की संभावना कम होती है। क्रेडिट वितरण की बारीकियों से समग्र पोर्टफोलियो को स्थिरता प्रदान करने वाले विविधीकरण लाभ मिलते हैं (पात्रा, 2023)।[11] 2014 से 2023 के दौरान, विभिन्न आकार के बकेट में बकाया राशि और खातों की संख्या दोनों के संदर्भ में, खुदरा ऋण का वितरण कमोबेश स्थिर रहा है, हालांकि मध्यम आकार के बकेट (अर्थात, ₹ 25 लाख से ₹ 1 करोड़ तक) में मजबूत वृद्धि देखी गई है। इसके अलावा, बैंक ऋण के अन्य घटकों (कृषि और व्यक्तिगत ऋणों को छोड़कर) की तुलना में, खुदरा ऋण का वितरण अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है और निम्न एवं मध्य-मूल्य वर्ग बकेट में वितरित किया जाता है (चार्ट 4)।

अत: खुदरा ऋण वृद्धि से खुदरा ऋण पोर्टफोलियो के अंतर्निहित संयोजन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। हालांकि, उत्पाद स्तर पर, संरचना में बदलाव आया है, यद्यपि यह परिवर्तन पर्याप्त नहीं हैं। समग्र खुदरा ऋण के भीतर आवास ऋणों की हिस्सेदारी में कमी आई है, जो दर्शाती है कि अन्य उत्पाद श्रेणियां जैसे, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं, क्रेडिट कार्ड और अन्य असुरक्षित ऋण अधिक आकर्षित कर रहे हैं (चार्ट 5)।

अन्य व्यक्तिगत ऋणों और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं को छोड़कर समग्र स्तर पर प्रवृत्तियों को प्रतिबिंबित करते हुए, प्रमुख खुदरा उत्पाद श्रेणियों में भी आकार बकेट में ऋण का वितरण स्थिर रहा है। आवास ऋण, वाहन ऋण और क्रेडिट कार्ड जैसे प्रमुख खुदरा उत्पादों में, मध्यम आकार बकेट से योगदान बढ़ रहा है। इसके अलावा, यह परिवर्तन गैर-विघटनकारी रहा है क्योंकि

[10] समग्र उपाय उदाहरणार्थ सकल घरेलू उत्पाद में ऋण से सूक्ष्म स्तर पर वितरण संबंधी प्रवृत्तियां नहीं हो सकती हैं, जो उत्पाद और इकाई दोनों स्तरों पर संकेन्द्रण जोखिमों को दर्शा सकती हैं।

[11] यद्यपि इस लेख में विनियामक खुदरा व्यापार पर चर्चा नहीं की गई है, तथापि यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि विनियामक खुदरा व्यापार के लिए कम जोखिम भारांश के लिए अर्हक मानदंड बारीकी और विविधीकरण के कारण है।

चार्ट 4: ऋण का साइज बकेट वार वितरण और उधारकर्ता खातों की संख्या[12]

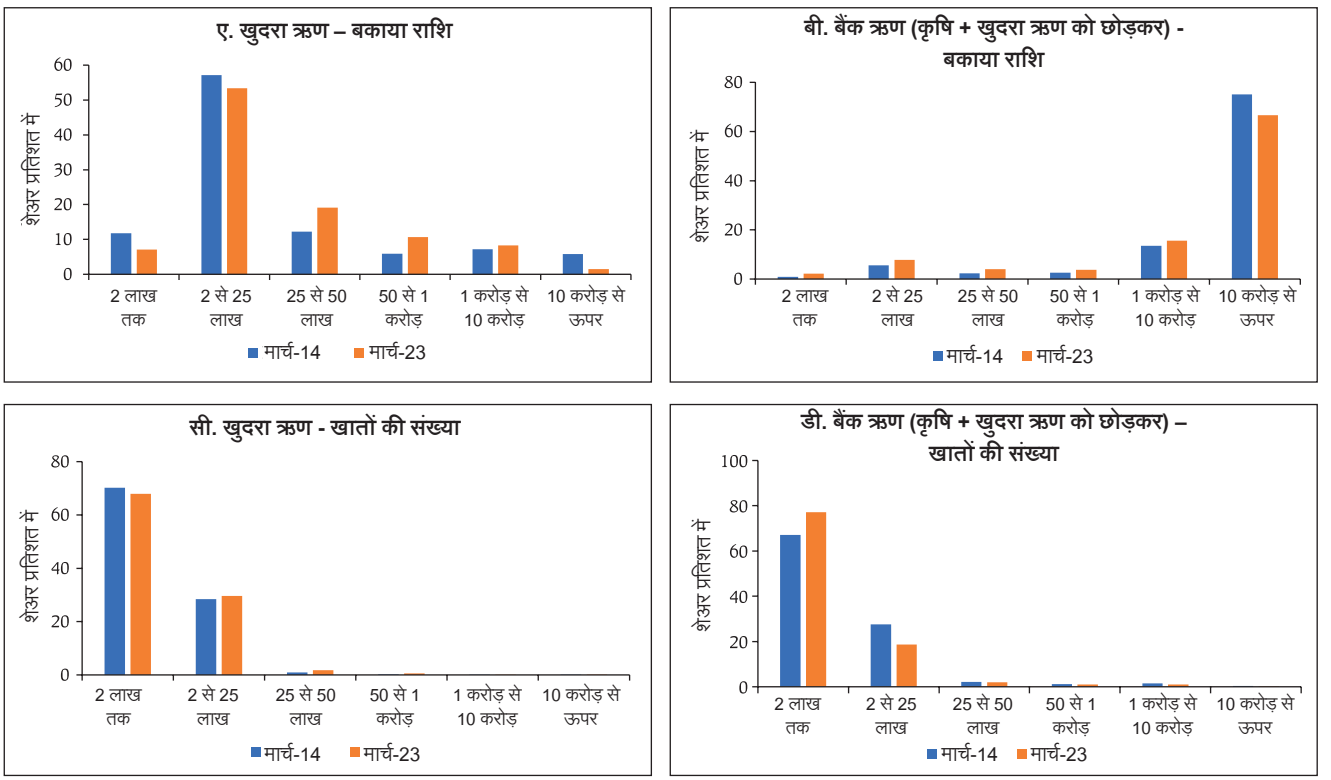

टिप्पणी : मूल 13 साइज़ बकेट को संक्षिप्तता के लिए 6 बकेट में तर्कसंगत बनाया गया है।

स्रोत: बुनियादी सांख्यिकीय विवरणी, ऋण के आकार और व्यवसाय के अनुसार वितरण पर त्रैमासिक डेटा।

संरचनागत परिवर्तन आकार बकेट में क्रमिक बदलाव का संकेत देता है। उपरोक्त के बावजूद, उत्पाद श्रेणियों (आवास ऋणों को छोड़कर) में, 80 प्रतिशत ऋण का योगदान ₹10 से 25 लाख रुपये से कम आकार बकेट द्वारा किया जाता है, इस प्रकार उत्पाद

चार्ट 5: खुदरा ऋण का उत्पादवार वितरण

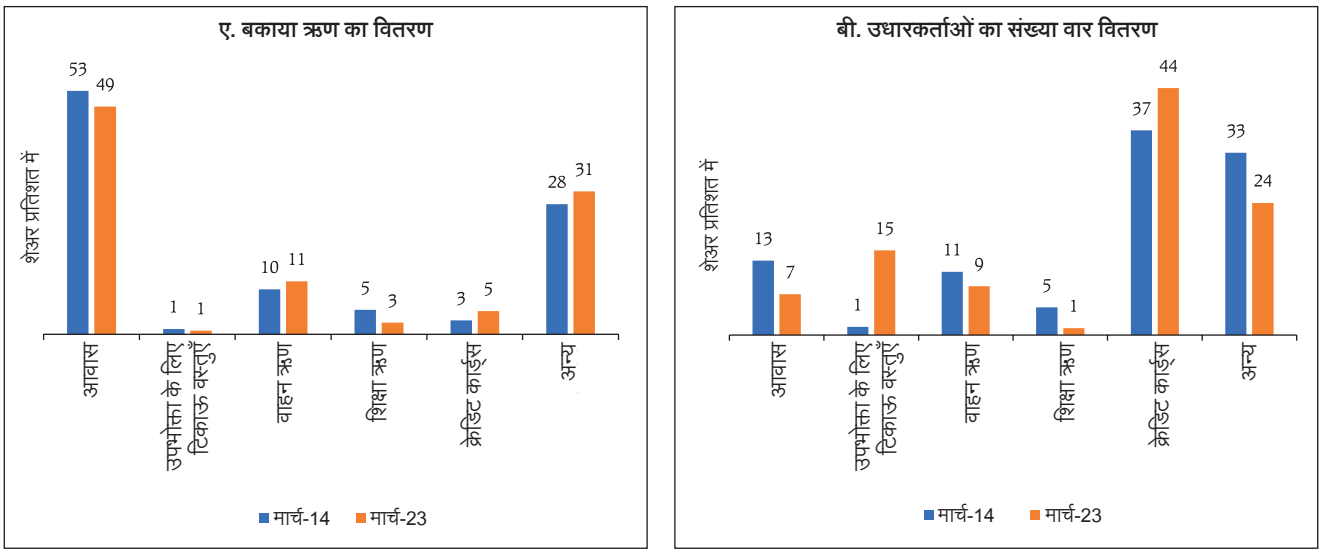

स्रोत: बुनियादी सांख्यिकीय रिटर्न, ऋण के आकार और व्यवसाय के अनुसार वितरण पर त्रैमासिक डेटा।

[12] त्रैमासिक बीएसआर शृंखला मार्च 2014 से उपलब्ध हैं।

चार्ट 6: बकाया ऋण में शेअर का उत्पाद और आकार के अनुसार संचयी वितरण

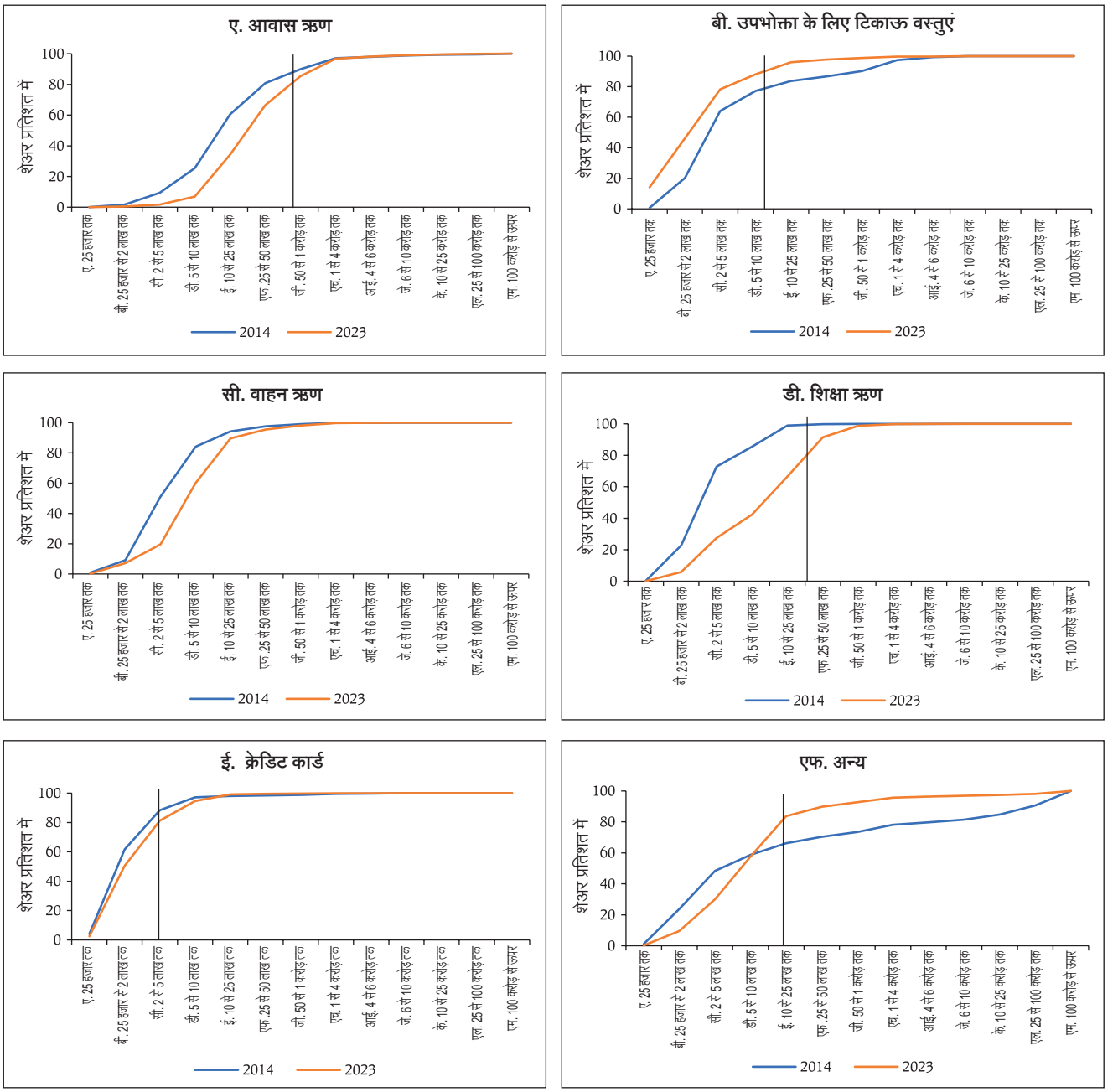

टिप्पणी: लंबवत रेखा बकाया ऋण में 80 प्रतिशत की संचयी हिस्सेदारी को इंगित करती है।

स्रोत: बुनियादी सांख्यिकीय विवरणी, ऋण के आकार और व्यवसाय के अनुसार वितरण पर त्रैमासिक डेटा।

स्तर पर भी खुदरा ऋण की सूक्ष्म[13] प्रकृति प्रतिबिंबित होती है (चार्ट 6)।

3.2 खुदरा ऋण - क्या कुछ प्रमुख बैंक समूहों के बीच संकेंद्रितता है

समग्र उधारकर्ता-स्तरीय विश्लेषण से पता चलता है कि उत्पाद श्रेणियों में खुदरा ऋण पोर्टफोलियो विस्तृत बना हुआ है और पिछले कुछ वर्षों से कोई प्रतिकूल संकेन्द्रण का निर्माण नहीं

[13] रिज़र्व बैंक के बासेल III मास्टर परिपत्र के अनुसार, विनियामक खुदरा के लिए अर्हक मानदंड अभिविन्यास, उत्पाद, ग्रैन्युलैरिटी और व्यक्तिगत एक्सपोजरों का कम मूल्य है। (https://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/content/pdfs/31MC12052023_A.pdf).

चार्ट 7: ऋण संवृद्धि के बैंक-स्तरीय संचालक

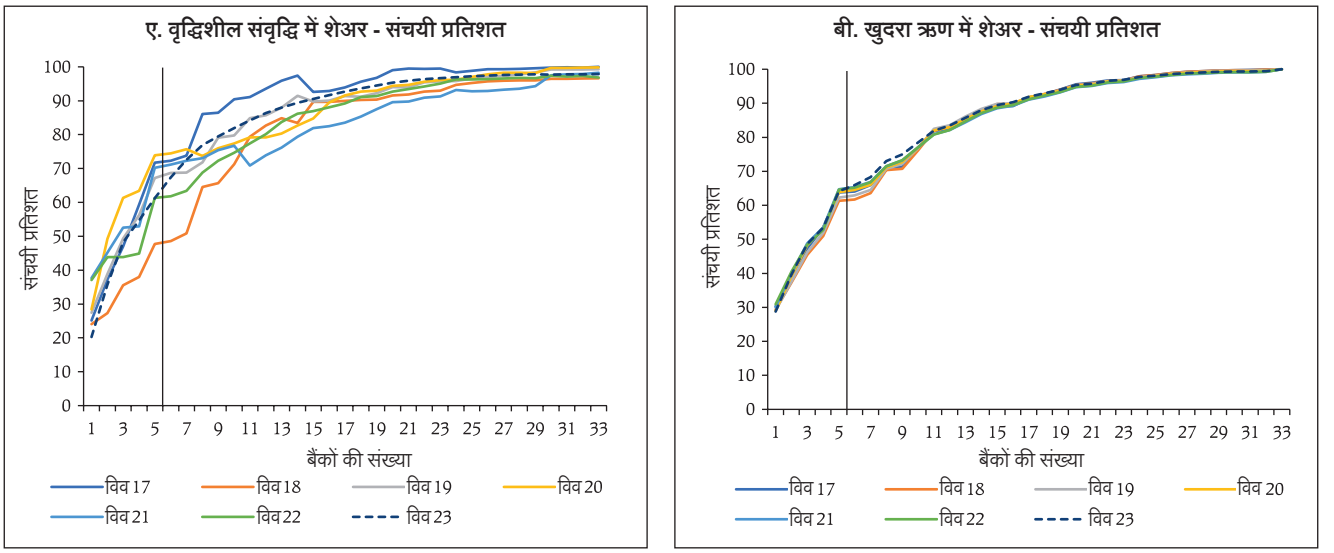

स्रोत: पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

देखा गया है। इसलिए, वित्तीय सेवा प्रदाताओं के बीच ऋण संकेन्द्रण का मूल्यांकन किया जाता है। बैंकों के बीच खुदरा ऋण में संवृद्धि के विश्लेषण से पता चलता है कि कुछ बैंक खुदरा ऋण संवृद्धि में सबसे अधिक योगदान दे रहे हैं। 2017 और 2023 के बीच, पांच बैंकों ने औसतन 60 प्रतिशत वृद्धिशील ऋण का योगदान दिया है। हालांकि, हाल के वर्षों में, प्रमुख बैंकों से वृद्धिशील विकास योगदान में कमी आई है (चार्ट 7)।

वृद्धिशील संवृद्धि में शेअर पर गणना किए गए एचएचआई (हिर्शमैन और हर्फिंडाहल सूचकांक) के मूल्य मार्च 2017 में 1400 से गिरकर मार्च 2023 में 1000 हो गए हैं, जो बैंकों के व्यापक समूह द्वारा उदार योगदान को दर्शाते हैं (सारणी 3)। खुदरा ऋण में वृद्धिशील वृद्धि के लिए अन्य बैंकों द्वारा बढ़ते योगदान के बावजूद, बकाया खुदरा ऋण में शेअर के लिए गणना किया गया एचएचआई मामूली रूप से मार्च 2017 में 1350 से मार्च 2023 तक 1250 हो गया है।

3.3 उत्पाद श्रेणी-वार और जोखिम समूह-वार ऋण का संचलन

बकाया ऋण प्रवाहों के जोखिम-स्कोर और खुदरा उत्पाद-वार उतार-चढ़ाव से पता चलता है कि संवितरित ऋण के टिकट

सारणी 3: खुदरा ऋण के लिए हिर्शमैन और हर्फिंडाहल सूचकांक में उतार-चढ़ाव

वित्तीय वर्ष	वृद्धिशील ऋण में शेअर	बकाया ऋण में शेअर
2016-17	1399	1324
2017-18	1110	1268
2018-19	1282	1255
2019-20	1563	1262
2020-21	1936	1311
2021-22	1789	1353
2022-23	1007	1248

टिप्पणी : संबंधित वित्तीय वर्ष को 31 मार्च को बकाया ऋण में शेअर।
स्रोत : पर्यवेक्षी विवरणी।

आकार में स्थिरता है। इसके अलावा, प्रति जीवित उधारकर्ता, क्रेडिट कार्ड के मामले को छोड़कर उच्च श्रेणी के उधारकर्ताओं के लिए क्रेडिट का औसत आकार अधिक है (चार्ट 8)। क्रेडिट कार्ड के मामले में, प्रति जीवित उधारकर्ता क्रेडिट बकाया निम्न श्रेणी के प्रमुख उधारकर्ताओं के लिए अधिक है, जो अपेक्षाकृत जोखिम वाले उधारकर्ताओं को ऋण के उच्च प्रवाह का सुझाव देता है।

चार्ट 8: औसत टिकट आकार के वितरण में उत्पाद और जोखिम स्तर के अनुसार घट-बढ़

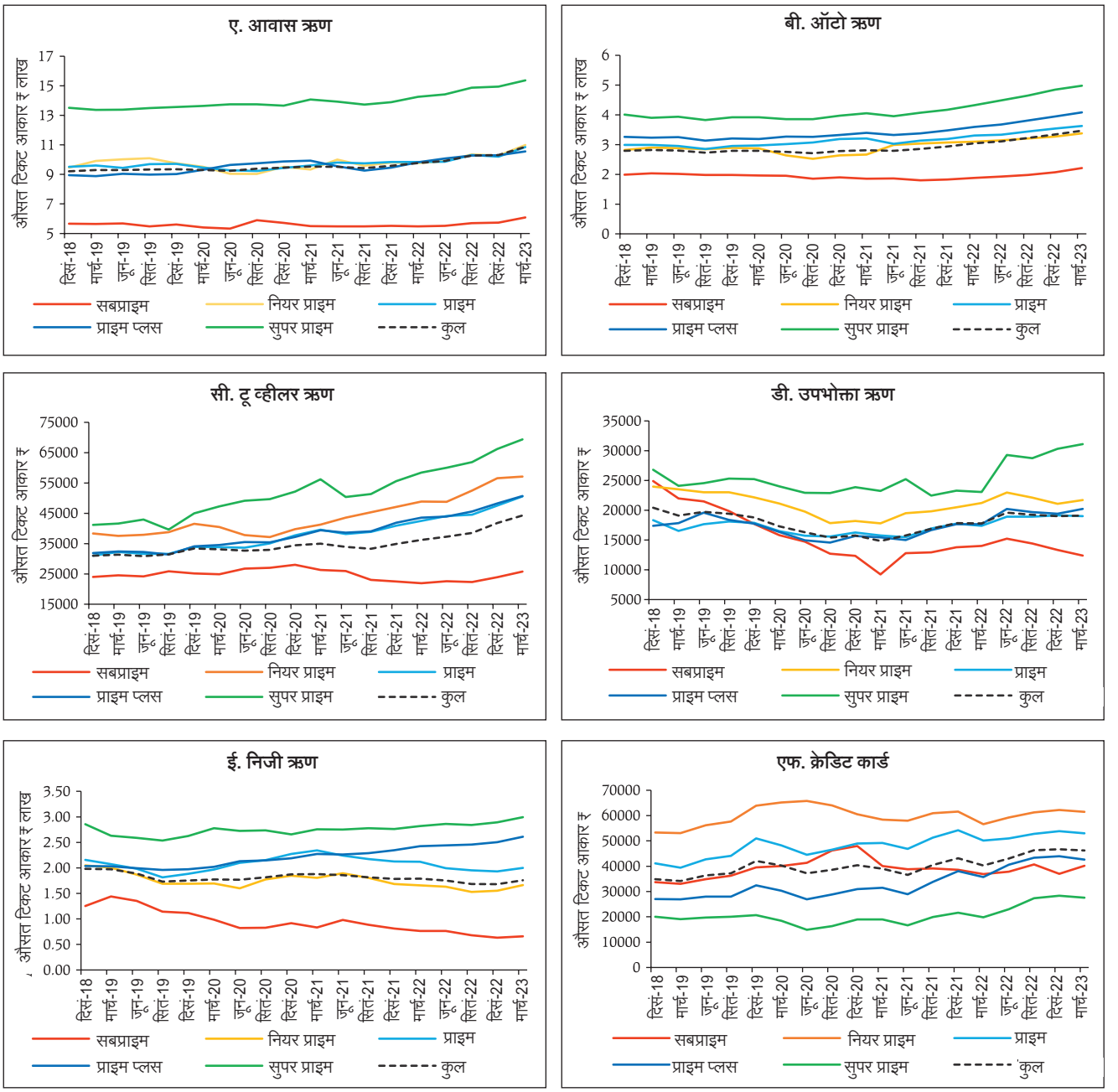

टिप्पणी : 1. जोखिम के घटते क्रम में जोखिम स्तर सबप्राइम, नियर प्राइम, प्राइम, प्राइम प्लस और सुपर प्राइम।
2. औसत टिकट आकार की गणना बकाया राशि को जोखिम स्तर में जीवित उधारकर्ताओं की संख्या से विभाजित करके की जाती है।

स्रोत: ट्रान्सयूनियन सिबिल और स्टाफ गणना।

4. महामारी के बाद की अवधि में खुदरा ऋण के प्रवाह में उतार-चढ़ाव और खुदरा ऋण पोर्टफोलियो में दबाव

कोविड-19 महामारी ने उत्पादन गतिविधियों को बाधित कर दिया, जिससे बैंक उधारकर्ताओं, विशेष रूप से छोटे टिकट उधारकर्ताओं के नकदी प्रवाह पर गंभीर प्रभाव पड़ा। कोविड-19 से संबंधित दबाव को कम करने के लिए, रिज़र्व बैंक सहित केंद्रीय बैंकों ने उधारकर्ताओं के लिए सहायक उपाय आरंभ किए (आरबीआई, 2023)। हालांकि, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है (चार्ट 1 और सारणी 1), खुदरा ऋण में वृद्धि कोविड-19 से संबंधित सहायक नीतियों की समाप्ति के बाद भी जारी रही है।

इसलिए, चिंताएं व्यक्त की गयी थी कि समर्थन नीतियों को समाप्त करने के परिणामस्वरूप पुनर्गठित आस्तियों या अधिस्थगन से बाहर आने वाली आस्तियों से चूक के मामले में समय अंतराल के साथ छिपी हुई कमजोरियां सामने आ सकती हैं (आरबीआई, 2023)।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, खुदरा ऋण की संरचना और संयोजन में हाल के दिनों में कोई प्रणालीगत बदलाव नहीं हुआ है। इसके अलावा, आस्ति गुणवत्ता मानदडों में सुधार दिखा है या एक स्थिर प्रक्षेपवक्र का पालन किया है। इसलिए, यह उम्मीद की जाती है कि महामारी से संबंधित दबाव, यदि कोई हो, तो वह खुदरा ऋण खंडों में क्रेडिट संवृद्धि और आस्ति गुणवत्ता के रुझान को भौतिक रूप से प्रभावित नहीं करेगा। साधनों की समानता के लिए एक सरल टी-परीक्षण ढांचे का उपयोग करके अनुभवजन्य रूप से जांच की जाती है। परीक्षण इस बात की जांच करता है कि क्या महामारी से पहले और महामारी के बाद की अवधि में विकास और आस्ति गुणवत्ता मापदंडों के औसत मूल्यों में कोई अंतर आया है या नहीं। ऋण वृद्धि और सकल अनुपयोज्य आस्ति अनुपात (जीएनपीए) के अलावा, तकनीकी बट्टे खाते डालने[14] और स्लिपेज अनुपात सहित जीएनपीए पर भी परीक्षण किया जाता है।[15]

तदनुसार, कोविड-19 के प्रकोप से पहले की तुलना में कोविड-19 के बाद खुदरा पोर्टफोलियो (प्रारंभिक और वास्तविक दोनों) में क्रेडिट प्रवाह और दबाव की स्थिति प्रस्तुत की है (सारणी 4)। यह देखा जा सकता है कि अधिकांश क्रेडिट उत्पादों ने कोविड-19 से पहले की अवधि की तुलना में कोविड-19 के बाद की अवधि में ऋण संवृद्धि में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है। क्रेडिट संवृद्धि के विपरीत, जीएनपीए अनुपात में दर्शाए गए दबाव के स्तर और खुदरा पोर्टफोलियो के स्लिपेज अनुपात में कोविड-19 के बाद की अवधि के दौरान गिरावट आई। हालांकि, क्रेडिट कार्ड और वाहन ऋण पोर्टफोलियो ने दबाव में एक मध्यम लेकिन सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की।

सारणी 4: खुदरा पोर्टफोलियो की संवृद्धि और जोखिम संरचना में परिवर्तन#

	प्री-कोविड-19 (मार्च 2015 - दिसंबर 2019)	पोस्ट-कोविड-19 (दिसंबर 2021 - जून 2023)	चिह्न के साथ सांख्यिकीय महत्व
ऋण संवृद्धि			
खुदरा	14.80	20.00	(+)**
आवास	17.02	10.38	(-)***
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	24.05	45.23	(+)
क्रेडिट कार्ड	28.78	24.99	(-)
वाहन ऋण	12.18	23.87	(+)*
शिक्षा ऋण	5.48	11.68	(+)***
अन्य खुदरा	9.89	37.05	(+)**
जीएनपीए अनुपात			
खुदरा	2.00	1.78	(-)***
आवास	**1.42**	**1.55**	**(+)***
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	4.56	1.86	(-)
क्रेडिट कार्ड	**1.52**	**1.96**	**(+)*****
वाहन ऋण	1.97	1.64	(-)***
शिक्षा ऋण	7.80	6.35	(-)***
अन्य खुदरा	2.72	1.91	(-)***
जीएनपीए+टीडब्ल्यूओ अनुपात			
खुदरा	**4.22**	**4.39**	**(+)***
आवास	**1.78**	**2.05**	**(+)*****
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	36.30	19.73	(-)***
क्रेडिट कार्ड	11.63	13.28	(+)
वाहन ऋण	**3.81**	**4.16**	**(+)*****
शिक्षा ऋण	**11.89**	**13.18**	**(+)***
अन्य खुदरा	6.48	5.34	(-)**
स्लिपेज अनुपात			
खुदरा	2.37	2.11	(-)*
आवास	1.51	1.15	(-)**
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	3.90	5.02	(+)
क्रेडिट कार्ड	**3.47**	**7.12**	**(+)*****
वाहन ऋण	**2.48**	**2.92**	**(+)****
शिक्षा ऋण	7.75	3.78	(-)***
अन्य खुदरा	3.68	2.51	(-)**

टिप्पणी : 1. टीडब्ल्यूओ : तकनीकी राइट-ऑफ।
2. #: मार्च 2020 से सितंबर 2021 की अवधि को कोविड-19 से प्रभावित चरम अवधि माना गया है।

5. निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था खुदरा ऋण संवृद्धि में उछाल देख रही है। क्रेडिट वृद्धि का नेतृत्व विभिन्न प्रकार के ग्राहक आधार पर अच्छी तरह से किया जाता है, जिसमें कुछ प्रारंभिक कमजोरी को छोड़कर यथोचित अच्छी वित्तीय सुस्थिति शामिल है। इसलिए, अध्ययन में दर्शाए गए हालिया रुझान इस बात को रेखांकित करते हैं कि बैंकों और अन्य वित्तीय सेवा प्रदाताओं के लिए यह अनिवार्य

[14] तकनीकी बट्टे खाते में डाली गई गैर-निष्पादित आस्तियों की राशि उन गैर-निष्पादित आस्तियों की राशि को दर्शाती है जो शाखाओं की बहियों में बकाया हैं (अथवा केन्द्रीकृत परिचालन इकाई में उधारकर्ताओं के ऋण खाता स्तर पर बकाया हैं) लेकिन प्रधान कार्यालय स्तर पर (पूर्णत या आंशिक रूप से) बट्टे खाते डाली गई हैं।

[15] वर्ष के आरंभ में मानक अग्रिमों के संबंध में वर्ष के दौरान गैर-निष्पादित आस्तियों में वृद्धि का अनुपात। अर्थात, वर्ष के दौरान एनपीए की नई अभिवृद्धि/वर्ष की शुरुआत में कुल मानक आस्तियों को 100 से गुणा किया गया।

है कि वे किसी भी अनुचित दबाव के निर्माण के लिए खुदरा खंड की बारीकी से और लगातार निगरानी करें (दास, 2023)।

उपरोक्त रुझानों के बावजूद, नीति निर्माता संरचनात्मक विवेकपूर्ण साधनों अर्थात, ऋण-सेवा अनुपात और खुदरा उधारकर्ताओं के ऋण-से-आय अनुपात का उपयोग करने पर भी विचार कर सकते हैं। जबकि मौजूदा समष्टि विवेकपूर्ण उपकरण खुदरा उत्पादों के विभिन्न वर्गों के लिए उनके अंतर्निहित जोखिम को दर्शाते हुए अलग-अलग जोखिम भार निर्दिष्ट करके ऋणदाताओं को समुत्थानशीलता प्रदान करते हैं,[16] वहीं नीति निर्माता उधारदाताओं से अपेक्षित सहमति प्राप्त करने; क्रेडिट हामीदारी को मजबूत करने; और मॉडलों की निगरानी को मजबूत करने के लिए उभरते प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी जैसे कि, खाता एग्रीगेटर्स का उपयोग करने के लिए ऋणदाताओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं (स्वामीनाथन, 2023)। उधारकर्ताओं के लिए उत्पाद और मूल्य निर्धारण विकल्पों दोनों के संदर्भ में अधिक लचीलेपन को सक्षम करने के अलावा, ऐसे ढांचे समग्र रूप से उधारकर्ता लीवरेज की निगरानी की सुविधा प्रदान करते हैं। इसे कुछ उधारकर्ता या उत्पाद श्रेणियों के लिए ऋण-से-आय (डीटीआई) सीमा निर्धारित करके आगे बढ़ाया जा सकता है। ऋण-से-मूल्य (एलटीवी) अनुपात पर प्रतिबंधों के साथ डीटीआई सीमाएं प्रभावी समष्टि विवेकपूर्ण उपकरण पाई जाती हैं, जिन्हें प्रणालीगत जोखिमों को शामिल करने के लिए सिंक्रनाइज़ किया जा सकता है (ली, असुनसियन, और किम, 2015; शिन, 2011)। इसके अलावा, ऐसे समष्टि विवेकपूर्ण उपकरण को क्रेडिट वृद्धि का समर्थन करने या कम करने के लिए विकसित समष्टि- आर्थिक स्थितियों के अनुरूप जल्दी से ठीक किया जा सकता है।

संदर्भ

Anthony, M. J., Shankar, S., & Sahoo, S. (2019, February). *"Sectoral deployment of bank credit in India". RBI Bulletin, LXXIII*(2), 35 - 53.

Bag, D. (2012), "*Growth of Retail Credit and Its composition in Indian banking: A Macro Evaluation*", International Journal of Computing and Corporate Research, 2(3).

BIS (2016). *"Macroprudential policies and integrated inflation targeting".* BIS Paper, (86a).

Brady, R. R. (2008). *"Structural breaks and consumer credit: Is consumption smoothing finally a reality?*", Journal of macroeconomics, 30(3), 1246-1268.

Das, S. (2023), "*Winning in Uncertain Times: The Indian Experience*", RBI, November. https://rbi.org.in/Scripts/BS_SpeechesView.aspx?Id=1396

Das, S, (2024), "*Governor's interaction during Mint BFSI Summit & Awards 2024 on January 11, 2024 (Edited Excerpts)*", RBI, January. https://rbi.org.in/scripts/BS_SpeechesView.aspx?Id=1403

Dobridge, C. L. (2018). "*High-cost credit and consumption smoothing".* Journal of Money, Credit and Banking, 50(2-3), 407-433.

Gopinath, S. (2005). *"Retail Banking - Opportunities and Challenges"*, RBI Bulletin, June.

Gupta, N. (2023, October 31). *The household debt challenge.* Retrieved from The Indian Express: https://indianexpress.com/article/opinion/columns/the-household-debt-challenge-9006522/

Kumar, P., Senapati, M., and Prakash, A. (2021), *"Changes in Sectoral Bank Credit Allocation: Developments Since 2007-08"*, RBI Bulletin, September.

Kumar, S., & Senapati, M. (2023). *"Retail Credit Trends–A Snapshot*". RBI Bulletin, 135-145.

Lee, M., Asuncion, R. C., & Kim, J. (2015,). *"Effectiveness of Macroprudential Policies in Developing Asia: An Empirical Analysis*", Asian Development Bank: Working Papers, No. 439.

Lombardi M. J., Mohanty M and I. Shim, (2017), *"The Real Effects of Household Debt in the Short and Long Run"*, BIS Working Papers No. 607.

Patra, M. D. (2023). *"India's financial sector - From exuberance to resilience". RBI Bulletin, LXXVII*(10), 107-122.

[16] उदाहरण के लिए, मौजूदा विवेकपूर्ण दिशानिर्देशों के अंतर्गत, क्रेडिट कार्ड और वैयक्तिक ऋण आवास ऋणों की तुलना में अधिक जोखिम भारांश रखते हैं।

RBI, (2022), *"Operations and Performance of Commercial Banks - Box IV.3: Bank Herding and Systemic Risk"*, Report on Trend and Progress of Banking in India 2021-22, 66-67.

RBI, (2023). "*Chapter VI. Regulation, Supervision and Financial Stability*", Annual Report, *Reserve Bank of India.*

RBI, (2023). *"Governor's Statement: October 6, 2023"*, Reserve *Bank of India.*

Roy, M. (2006), "A Review of Bank Lending to Priority and Retail Sectors", Economic and Political Weekly 41(11) 1035-1040.

Rubio, M., & Carrasco-Gallego, J. A. (2014). *"Macroprudential and monetary policies: Implications for financial stability and welfare*", Journal of Banking & Finance, 49, 326-336.

Sengupta, R., & H. Vardhan (2021), *"'Consumerisation' of banking in India: Cyclical or structural?"*, Ideas for India, July 23, 2021. https://www.ideasforindia.in/topics/moneyfinance/consumerisation-of-banking-in-india-cyclical-or-structural.html

Shin, H. S. (2011). *"Macroprudential policies beyond Basel III*", Bank of International Settlements, Working Papers (No. 60).

Swaminathan, J. (2023), *"Building resilient brand India amidst global uncertainty"*, RBI, December. Retrieved https://rbi.org.in/scripts/BS_SpeechesView.aspx?Id=1399